

**Dr. Sudhir Kumar Singh**

**Principal**

**Rohtas mahila college, sasaram**

**Sociology U. G. Notes**

**B. A. (Hons.) Part 2**

**Paper - 4th - samaajik sodh**

**Topic- वैज्ञानिक पद्धति किसे कहते है? (vaigyanik paddhati ka arth)**

विज्ञान घटनाओं का अध्ययन है, विज्ञान का सम्बन्ध पद्धति से होता है न कि अध्ययन विषय से। वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण करके ही यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो सकता है। एक विद्वान के अनुसार 'सत्य तक पहुँचाने के लिए कोई संक्षिप्त मार्ग नहीं है इसके लिए हमें वैज्ञानिक पद्धति के महाद्वार से ही गुजरना पड़ेगा

**वैज्ञानिक पद्धति की परिभाषा (vaigyanik paddhati ki paribhasha)**

जॉर्ज लुण्डबर्ग के शब्दों में "समाज विज्ञानियों में यह विश्वास दृढ़ हो गया है कि उनके सामने जो समस्याएं हैं उनका समाधान सामाजिक घटनाओं के निष्पक्ष और व्यवस्थित अवलोकन, सत्यापन, वर्गीकरण तथा विश्लेषण द्वारा ही सम्भव है। मोटे तौर पर अध्ययन के इसी उपाग्रम को वैज्ञानिक पद्धति का नाम दिया जाता है।

**वैज्ञानिक पद्धति के प्रमुख चरण (vaigyanik paddhati ke charan)**

**1. विषय का चुनाव**

सामाजिक अनुसंधान का पहला कदम या पहला चरण विषय के चुनाव से प्रारंभ होता है। सामाजिक अनुसंधान में जब भी कोई अनुसन्धानकर्ता किसी भी विषय का चुनाव (चयन) करे, तो उसे इन प्रश्नों पर आवश्यक रूप से विचार करना चाहिए—

1. अनुसंधान कार्य की दृष्टि से विषय का चुनाव व्यावहारिक है अथवा नहीं? अर्थात् क्या चुने विषय पर अनुसंधान कार्य किया जा सकता है या नहीं?
2. उपलब्ध विधियों और उपकरणों की सहायता से क्या उपर्युक्त विषय पर अध्ययन किया जा सकता है?
3. जिस क्षेत्र का चुनाव किया है, क्या उस क्षेत्र का सम्पूर्ण अध्ययन किया जाता है?

**2. अध्ययन के साधनों तथा पद्धतियों का चयन**

उप-कल्पना के निर्माण के पश्चात यह निश्चित किया जाता है कि अध्ययन के लिए किन साधनों तथा पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। समस्या की प्रकृति पर ही वह निर्भर करता है कि आंकड़ों के संकलन के लिए कौनसी पद्धति अपनाई जाए। सामग्री की संकलन निम्नलिखित पद्धति में किया जाता है—

1. साक्षात्कार
2. अनुसूची
3. प्रश्नावली
4. निरीक्षण
5. द्वितीयक सामग्री

### 3. समक स्रोतों का अनुमान

अनुसन्धानकर्ता को उन स्रोतों का पता लगाना जहाँ विषय से सम्बंधित सामग्री उपलब्ध हो। अनुसन्धानकर्ता को मात्र स्रोतों का ही पता नहीं लगाना चाहिए, बल्कि उसको उन स्रोतों की पहुँच के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। इस प्रकार तथ्यों के स्रोतों और उन तक पहुँच के बारे में अनुसन्धानकर्ता को स्पष्ट रूप से जानकारी होनी चाहिए।

### 4. पूर्व-अध्ययन और पूर्व-परीक्षण

अनुसन्धानकर्ता को अनुसंधान कार्य में आगे किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए उसे निम्न दो कार्यों को सम्पादित करना चाहिए—

1. प्रयोग योजना के तौर पर पूर्व अध्ययन करना
2. अपने अध्ययन का परीक्षण करना।

### 5. समय और व्यय का अनुमान

अनुसन्धानकर्ता को इस बात का अनुमान लगा लेना चाहिए कि जो अध्ययन किया जा रहा है, उसमें समय कितना लगेगा तथा धन की कितनी मात्रा खर्च होगी।

### 6. कार्यकर्ताओं का चुनाव और प्रशिक्षण

अनुसंधान कार्य में अनेक व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ सकती है। हमें ऐसे व्यक्तियों का चुनाव करना चाहिए, जो योग्य, अनुभवी और लगनशील हों। इन व्यक्तियों को अनुसंधान कार्यों के सम्बन्ध में उचित प्रशिक्षण देना चाहिए।

## 7. तथ्यों का संकलन

अनुसंधान कार्य की यथार्थ शुरुआत तथ्यों के संकलन से प्रारंभ होती है। तथ्यों को संकलित करते समय तटस्थता का होना अनिवार्य है।

## 8. तथ्यों का वर्गीकरण

तथ्यों को संकलित करने के उपरांत अनुसंधान कार्य में उपयोगी बनाने के लिए उन्हें निश्चित क्रमों और श्रेणियों में विभाजित करना आवश्यक हो जाता है। तथ्यों के वर्गीकरण से सरलता का विकास होता है।

## 9. सामान्यीकरण

वर्गीकरण तथ्यों का विश्लेषण किया जाता है। इस विश्लेषण की सहायता से सामान्य नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। इससे उपकल्पना की परीक्षा होती है। वह सामाजिक अनुसंधान का अन्तिम चरण है। सामान्यीकरण को ही प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

## वैज्ञानिक पद्धति की विशेषताएं (vaigyanik paddhati ki visheshta)

### 1. सामान्यता

वैज्ञानिक पद्धति विज्ञान की सभी शाखाओं में सामान्य होती है। इस पद्धति के द्वारा विषय से सम्बंधित सामान्य तथ्यों को ढूंढा जाता है।

### 2. वस्तुनिष्ठता

इस पद्धति में अध्ययन विषय को ठीक उसी रूप में प्रस्तुत करते हैं अध्ययन करते समय पूर्व धारणाओं, विचारों पक्षपात आदि को दूर रखते हैं। इस प्रकार तटस्थ अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति का प्रमुख लक्षण है।

### 3. भविष्यवाणी करने की क्षमता

वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा घटनाओं का कार्यकारण सम्बन्धों को जानते हैं। इससे घटना के बारे में भविष्यवाणियां करना सम्भव होता है। यह विज्ञान की महत्वपूर्ण विशेषता है।

#### 4. सत्यापनशीलता

वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा निष्कर्षों की जांच किसी भी समय, किसी के भी द्वारा की जा सकती है। निष्कर्षों की पुनः परीक्षा केवल वैज्ञानिक पद्धति में ही सम्भव होती है।

#### 5. निश्चयात्मकता

वैज्ञानिक पद्धति में संदेह उत्पन्न करने वाले तत्वों को कोई स्थान नहीं मिलता। इसमें सुनिश्चित प्रणालियों के द्वारा अध्ययन होता है। इनका अनुसरण कर कोई भी वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त कर सकता है।